आरती श्री रामचन्द्र जी की

आरती कीजे रामचन्द्र जी की ।
हरि-हरि दुष्ट दलन सीतापति जी की ।।

पहली आरती पुष्पन की माला,
काली नाग नाथ लाये गोपाला ।।

दूसरी आरती देवकी नन्दन,
भक्त उबारन कंस निकन्दन ।।

तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे,
रत्न सिंहासन सीता राम जी सोहे ।।

चौथी आरती चहुं युग पूजा,
देव निरंजन स्वामी और न दूजा ।।

पांचवीं आरती राम को भावें,
रामजी का यश नामदेवजी गावें ।।

विवरण

श्री राम चन्द्र जी की आरती कीजिए । जो दुष्टों का विनाश करने वाले सीता के पति हैं । पहली आरती पुष्पों की माला चढ़ा के कीजिए, जो गोपाला (गायों को पालने वाले) काली नाग का बन्धन कर लाये थे । दूसरी आरती उस देवकी नन्दन की कीजिए जिन्होंने कंस का संहार करके अपने भक्तों का उद्धार किया था ।

तीसरी आरती उन प्रभु की कीजिए, जो रत्नों से जड़ित सिंहासन पर बैठे हुए हैं तथा बगल में सीता जी भी बैठी हुई हैं एवं तीनों लोकों को मोहने वाले हैं । चौथी आरती चारों युगों में पूजे जाने वाले देवताओं को

प्रसन्न करने वाले अद्वितीय स्वामी को कीजिए । पाँचवी आरती कीजिए जो रामजी को पसन्द आए, ऐसे राम जी जिनका यश नामदेव जी गाते हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.